



"दोहावली" क्रमांक १५७

१. जग में काहे आय हो- कहत "श्रीबाबाश्री" विचार ।
यज्ञ, दान, तप, धर्म को - भूल गयो संसार ॥
२. धीरज खोके न जियो - करियो माँ को ध्यान ।
कहें "श्रीबाबाश्री" हर जीव से - श्री मैया जी बाँटें ज्ञान ॥
३. आर्तभाव करके सदा - हरि को लेव पुकार ।
कहें "श्रीबाबाश्री" तेरे भाव से - हरि करेंगे पार ॥
४. भटक-भटक नर चल दियो - पर मुख निकसो नाय ।
अब "श्रीबाबाश्री" हर जीव को - कौन विधि समझाय ॥
५. दुख में दुखिया न बनो - सुख में न खो जाव ।
कहें "श्रीबाबाश्री" हर जीव रो - नित पल हरि गुन गाव ॥
६. काम न छूटे अन्त लौ - सुन लो चतुर सुजान ।
कहें "श्रीबाबाश्री" हर जीव से - काम ना आवे काम ॥
७. धर धीरज - मीठो कहो - धीरज में मिल जाव ।
मन "श्रीबाबाश्री" भटकन लगे - धर धीरज समझाव ॥
८. पति परमेश्वर होत हैं - इतना सबको ज्ञान ।
जब "श्रीबाबाश्री" देखन चले - दिखा जीव अंजान ॥

९. रीत जियन की मिल गई - घर बैठे प्रभु द्वार ।
कहें "श्रीबाबाश्री" हर जीव से - हरि ही पालनहार ॥
१०. हरि में हर जैसे मिले - ऐंसी तुम मिल जाव ।
कहें "श्रीबाबाश्री" हर जीव से - हरि हर के गुन गाव ॥
११. पार करें नैया तेरी - ऐंसे खेवनहार ।
कहें "श्रीबाबाश्री" तेरे भाव से - वंश होय उद्धार ॥
१२. मात पिता तुमको मिले - अब न बनो अनाथ ।
कहें "श्रीबाबाश्री" जो विधि करे - फक्कड़ उनके साथ ॥
१३. सांचे की संगत मिली - सांचे बनके आय ।
जब "श्रीबाबाश्री" करनीं करी - सांचे ही कहलाय ॥
१४. उखड़त डूबत तुम मिले - सुनलो चतुर सुजान ।
रीत जियन की जों करे - वो "श्रीबाबाश्री" धनवान ॥
१५. बात सुनी जो जीव की - है कारज में ध्यान ।
का "श्रीबाबाश्री" मुख से कहें - जगत भयो गुनवान ॥
१६. अब न टूटो डाल से - हँस "श्रीबाबाश्री" समझाय ।
तब के बिछड़े अब मिले - नर तन में तो आय ॥
१७. जीवन भर जियरा जरो - करतो तनक विचार ।
अब लौ मान "श्रीबाबाश्री" की - दओ "रेवा" ने सार ॥

१८. सत्य-धर्म-भक्ति बिना - जीव नींद भर सोय ।
मौत खड़ी हर द्वार पर - मति "श्रीबाबाश्री" की रोय ॥

१९. माता भक्ति रो रही - कर बेटों को ध्यान ।
बचा "श्रीबाबाश्री" सत्-धर्म को - चबा रहे गुनवान ॥

२०. मनुआ साँची न सुने - दिन भर सुने लबार ।
अब "श्रीबाबाश्री" साँची कहें - मनुआ लेव सम्हार ॥

२१. ज्ञानी-पढ़-पढ़ बन गये - कर लो तनिक विचार ।
चारों वर्ण - "श्रीबाबाश्री" अब- भये एक थे-चार ॥

२२. खुद टूटा तू डाल से, हँस "श्रीबाबाश्री" समझाय
तब के बिछुड़े अब मिले, नरतन में तो आय

२३. निर्भय होके तुम जियो,
करियों श्री माँ जी को ध्यान ।
कहें "श्री बाबा श्री" हर जीव से
श्री मैया जी बाँटे ज्ञान ॥

-----X-----X-----